R.N.I.- UP-
HIN/2001/3996
ISSN- 2581-6128

स्थापन दिवस के 23वें वर्ष में प्रवेश

संयम • संस्कार • सन्तुलन

शहर समता

(हिंदी साप्ताहिक)

www.shaharsamta.com

शोध पत्र

'कर्मक्षेत्र रणभूमि यही है, मानव हो तुम कर्म करो।
कर्म से कभी विमुख न रहना, मन में यह संकल्प करो।'-
उमेश श्रीवास्तव

संस्थापकः स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 श्रीमती साधना श्रीवास्तव
सम्पादकः उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

स्मृति सम्मान अंक

वर्ष 23 | अंक 39 | रविवार, इलाहाबाद, 25 फरवरी 2024 | पृष्ठ 4 | विशेषांक मूल्यः 3 रू0

संपादकीय

स्मृति सम्मान अंक

पिता की स्मृति में सम्मान ,
जीवन का सुंदर सोपान।
आज प्रफुल्लित मन होता है,
जीवन का समतल स्रोता है।
भरी सभा में बोल रहा हूं,
मन के भाव को खोल रहा हूं।

कन्हैया लाल स्मृति साहित्य सम्मान की आज दूसरी कड़ी है। इस बार कन्हैया लाल स्मृति सहित सम्मान 'कविता के क्षेत्र में **प्रोफेसर मिथिलेश कुमार त्रिपाठी** को उनके महाकाव्य '**अर्धांगिनी**' पर, **डॉक्टर कल्पना वर्मा** को उनकी कहानी संग्रह

'**छोटे शहर की लड़की**' पर, **डॉक्टर राजेश कुमार गर्ग** को उनके आलोचनात्मक कृति '**हिंदी जाति और रामविलास शर्मा**' पर, डॉक्टर **शिवानी चंद्रा** को उनके उपन्यास '**मिडिल रोड**' पर एवं नाटक के क्षेत्र में वरिष्ठ रंगकर्मी '**आलोक नायर**' को उनकी कृति '**मैं सुभाष**' पर देते हुए संस्था हर्षित एवं पुलकित है।

कन्हैया लाल स्मृति साहित्य सम्मान निरंतर अपनी गति बरकरार रखेगा। ऐसा संस्था का संकल्प है।

आज बताना क्या है हमको ,
सब कुछ अच्छा-अच्छा है ।
साहित्य में अब भी बचा है ,
दुनिया कितना सच्चा है ।

वरना तो हर ओर है गच्चा । आपा-धापी के इस दौर में हर किसी को सिर्फ अपनी पड़ी है। ऐसे में सम्मान देना मनुष्य को बहुत बड़ा बल प्रदान करता है। जिम्मेदारियां बढ़ती हैं। सामाजिक सरोकारों की बुनियादी बातों को साहित्यकार बड़ी शिद्दत से महसूस कर उसे अपनी रचना के माध्यम से व्यक्त करता है।

इस सम्मान समारोह में प्रोफेसर रवि कुमार मिश्रा, डॉक्टर अरुण कुमार मिश्रा, संजय सक्सेना और रचना सक्सेना का सहयोग खूब मिला। बिना इनके सहयोग के यह सम्मान और यह सम्मान समारोह करना संभव नहीं था। इसलिए यह सभी लोग साधुवाद के पात्र हैं। सामने बैठे प्रबुद्ध जन का एक बार पुनः आभार।

अंत में -

हिंदी में बिंदी का महत्व जान लीजिए ,
सुंदर सलोने शब्द को पहचान लीजिए ।
भाषा सुदृढ़ है ज्ञान का अनमोल खजाना ,
यह विश्व की भाषा बने यह ठान लीजिए।

-उमेश श्रीवास्तव

महाकाव्य 'अर्धांगिनी' का जीवन-दर्शन

डॉ मिथिलेश कुमार त्रिपाठी

श्री रामचरितमानस के बालकांड 11/4-5 के अनुसार जिस प्रकार स्वाति नक्षत्र की जल-बूँदों के समुद्र-स्थित सीपी में पड़ने से मुक्तामणि का जन्म होता है, उसी प्रकार हृदयस्थ मति में सरस्वती की कृपा से श्रेष्ठ विचारों की वृष्टि से कवित्व का जन्म होता है। इस रूपक के अनुसार हृदय का आशय है 'भाव-जगत'। मति का आशय आगामिगोचरा अर्थात मन के संकल्प-विकल्प की दशा में उचित- अनुचित का विचार करके निर्णय देने वाली शक्ति से है और सरस्वती प्रतीक हैं नवनवोन्मेषशालिनी प्रज्ञा अतएव अन्तरात्मा की। अभिप्राय यह है कि जब सरस्वती अर्थात अतीन्द्रिय प्रज्ञा के सक्रिय होने पर अभिनव श्रेष्ठ स्फुरणाएँ मति में सुंदर व श्रेष्ठ विचार बनकर प्रकट होती हैं तो हृदय की पवित्र भावना में पचकर वे (सद्विचार)कवित्व बन जाते हैं। निर्मल प्रज्ञा जागृत होती है श्री राम की कृपा से,यथा-'जा पर कृपा करहु जनु जानी। कवि उर अजिर नचावत बानी।। राम 'विग्रहवान धर्म' हैं - 'रामो विग्रहवान धर्मः'। यहाँ धर्म का अभिप्राय मानवधर्म अर्थात मनुष्यता को धारण करने वाली धारणाशक्ति से है। मनुष्यता के मूल में होती है 'सर्वे भूत हिते रताः'की भावना। अभिप्राय यह है कि रचना वह श्रेष्ठ होती है,जिसमें प्राणिमात्र के हित की भावना निहित होती है।

कवित्व शक्ति को प्राकृत जनों के गुणगान में ल गाने वाले कवि की सरस्वती अर्थात निर्मल प्रज्ञा या अंतरात्मा सिर धुन-धुन कर पछताती है। नये संदर्भ में प्राकृत जन श्रम-शोषण पर जीवित रहने वाला वे सुविधाभोगी लोग होते हैं, जो आहार, निद्रा, भय, मैथुन की संकीर्ण परिधि के अंदर से सिमटे रहते हैं। सरस्वती उस महामानव के गुणगान पर प्रसन्न होती हैं,जो सुविधाभोग का परित्याग करके समस्त प्राणियों के हित के लि ए संघर्ष करता हुआ आत्मोत्सर्ग के हित सदैव तत्पर रहता है। ऐसे महान जन की प्रशंसा में कविता लिखने वाले कवि की सरस्वती अर्थात अन्तरात्मा पछताती नहीं, बल्कि गर्व का अनुभव करती है। महानता का निर्धारण जन्म से नहीं, बल्कि कर्म से होता है। मानवेतर हीन योनि में जन्मा जीव भी अपने सत्कर्मों द्वारा महान बनकर महाकाव्य का महानायक बन सकता है। इसके विपरीत उच्च कुल में उत्पन्न व्यक्ति भी सत्कर्म से विभ्रष्ट होकर खलनायक की श्रेणी में आ जाता है।

आधुनिक संदर्भ में किसी महान व्यक्ति-जीवन की महान घटनाओं को लक्ष्य करके साहित्यिक सौन्दर्य के साथ रसात्मक भाषा में लिखी गयी प्रेय, किन्तु श्रेयमयी रचना को महाकाव्य कहा

जा सकता है। महान जीवन सुविधाभोग के विरुद्ध उस संघर्षजीविता पर अवलंबित होता है जो नाना जागतिक चुनौतियों के बीच असंख्य समस्याओं से निपटते रहने के बावजूद अम्लान-अकातर बनी रहकर जनकल्याणार्थ जीवित रहती है। वही महानता महाकाव्य का आलंबन बनने के योग्य होती है जो कृपा-प्राप्त या आरोपित न होकर कर्मकुशलता एवं तपस्साधना द्वारा उद्भूत हुआ करती है और जिसके तेज के समक्ष सभी प्रकार के विघ्न अस्तित्वहीन से हो जाते हैं।

महानता के मुख्य रूप से दो भेद होते हैं,यथा-उदात्त एवं उद्धत। तपस्साधना के परिणाम स्वरूप जिस अतीन्द्रिय शक्ति का जागरण होता है, वह जब सकारात्मक दिशा में प्रवाहित होती है तो शक्तिमान उदात्त श्रेणी की महानता धारण करता है। इसके विपरीत उसका नकारात्मक दिशा में प्रवाहित होना व्यक्तित्व को उद्धत बना देता है। इसी उदात्त एवं उद्धत के संघर्ष की रोचक किंतु रसात्मक गाथा होता है महाकाव्य।

'अर्धांगिनी' महाकाव्य एक ऐसे उदात्त नारी-जीवन पर अवलंबित है जो मानुषतासुलभलघिमा के बीच भी महान था। जिसमें बहुत कुछ को इच्छित दिशा में मोड़ देने का साहस और उत्साह था। जिसने सदैव अपने सुख को बाँटा और दूसरों के दुःख को बँटाया तथा जिसमें सर्व-मंगला के सभी श्रेष्ठ गुण विद्यमान थे। अर्धांगिनी की मानुषी काया में दुर्गा,काली और अन्नपूर्णा की समेत शक्ति का प्रवाह था। वह एक मतिमान मंत्री की भाँति पति को उचित सुझाव देती थी, समर्पित सेविका के समान सास,ससुर और पति की सेवा करती थी, परिवार-जनों को भोजन कराते समय वह एक ममतामयी माँ का स्वभाव धारण कर लेती थी और शयन-काल में साक्षात रंभा लगती थी। वह पति के धर्म-कार्य में सदैव अनुकूल रहने वाली धरती के समान क्षमाशीला नारी थी। वह श्रम के ताप में अपने जीवन को जला-जला कर घर भर को प्रकाश प्रदान किया करती थी। वर्तमान समाज जिसे सुख कहता है, वह उसे कभी मिला ही नहीं। उसने सुख को चाहा भी नहीं। उसका जन्म एक ऐसी समृद्धि की गोद में हुआ था जो नितांत अल्पायु था ।उसका बचपन अभाव की छाया और शैशवावस्था आतताई-यंत्रणा के बीच बीता था। कैशोर्य-काल में पति के प्रणय-मधु के सहारे संघर्ष करती हुई वह कुटुंब की गाड़ी खींचती रही और यौवन काल के अंतिम चरण तक परिवार को समृद्ध के उन्नत शिषर पर आरूढ़ करने के प्रयास में तत्पर थी। ऐसी संघर्ष की देवी जब एक दिन अकस्मात महाकाल की गहन गुहा में विलीन हो गई तो हृदय में करुणा की जो धारा प्रवाहित हुई उसने 'अर्धांगिनी' संज्ञक महाकाव्य का स्वरूप ग्रहण कर लिया ।आज अर्धांगिनी अशोका हमारे बीच में नहीं हैं ,किंतु उनकी सूक्ष्म आत्मा सदैव मेरा पथ-प्रदर्शन कर रही है।

नारी-जीवन की विविध विडम्बनाओं को लक्ष्य करके लिखा गया यह महाकाव्य मानवीय संवेदना को उभार कर ऐसे अनेक करणीय एवं वर्जनीय आचरणों की व्यंजना करता है जो पति-पत्नी के संबंधों में आत्मीय प्रगाढ़ता का अमृत कम नहीं होने देता। इसमें इस जीवन संदेश की सबल व्यंजना है कि पति-पत्नी का संबंध ऐन्द्रिय वासना-विनिर्मुक्त भावना पर अवलंबित होकर जीवन-जगती को स्वर्गीय सुख-समृद्धि से संपन्न कर देता है। काव्य कला के सभी अपेक्षित गुणों से संपन्न 'अर्धांगिनी' संज्ञक महाकाव्य पठनीय और भावनीय होने के साथ-साथ चिन्तनीय भी है। इसमें निर्देशित की गयी समस्याओं पर चिंतन करके पाठक-समाज रचनात्मक ऊर्जा के प्रस्फुटन और प्रवाह के अनुरूप वातावरण की सृष्टि कर सकेगा।

आचार्य हिन्दी विभाग
स्नातकोत्तर महाविद्यालय पट्टी प्रतापगढ़ (उ प्र)

डॉ रामविलास शर्मा की आलोचना दृष्टि हिन्दी साहित्य का करती है प्रतिनिधित्व

डॉ अरुण मिश्रा

प्रयागराज का प्रतिष्ठित 'कन्हैयालाल स्मृति साहित्य सम्मान' हिन्दी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के शिक्षक डॉ राजेश कुमार गर्ग को दिए जाने की घोषणा की गई। डॉ. गर्ग को यह सम्मान उनकी आलोचना कृति 'हिन्दी जाति और रामविलास शर्मा' के लिए प्रदान किया गया है। डॉ. गर्ग ने बताया कि हिन्दी आलोचना का परिदृश्य बहुत व्यापक है। सम्यक और निष्पक्ष दृष्टि ही आलोचना को बेहतर बना सकती है। एक पक्षीय दृष्टि साहित्य और समाज के विकास के लिए घातक है। रामविलास शर्मा की आलोचना दृष्टि पर बात करते हुए वह कहते हैं कि शर्मा जी की आलोचना दृष्टि हिन्दी साहित्य का प्रतिनिधित्व करती है। उन्होंने हिन्दी पट्टी के लगभग सभी पक्षों पर कलम चलाई है। साहित्य के विभिन्न युग, विधाएँ और रचनाकार उनकी दृष्टि से गुजरे हैं। वह सच्चे अर्थों में हिन्दी और हिन्दी जाति के प्रतिनिधि आलोचक हैं। निराला उनके प्रिय कवि हैं, जिनके बहाने उन्होंने साहित्य को देखने की दृष्टि दी है। रामविलास शर्मा की आलोचना दृष्टि हिंदी साहित्य की धरोहर है।

> साहित्य के विभिन्न युग, विधाएँ और रचनाकार उनकी दृष्टि से गुजरे हैं। वह सच्चे अर्थों में हिन्दी और हिन्दी जाति के प्रतिनिधि आलोचक हैं। निराला उनके प्रिय कवि हैं, जिनके बहाने उन्होंने साहित्य को देखने की दृष्टि दी है। रामविलास शर्मा की आलोचना दृष्टि हिंदी साहित्य की धरोहर है।

हिंदी जाति की अवधारणा रामविलास शर्मा के जातीय चिंतन का केंद्रीय बिंदु है। भारतीय साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन तथा वैश्विक साहित्य से अन्तर्क्रिया के द्वारा रामविलास जी ने साहित्य के जातीय तत्वों की प्रगतिशील भूमिका की पहचान की है।

प्रो (डॉ.) मिथिलेश कुमार त्रिपाठी को यह सम्मान उनके अर्धांगिनी महाकाव्य पर दिया जा रहा है। त्रिपाठी जी की गणना समकालीन महाकवियों में की जाती हैं।

आप भारतीय संस्कृति और संस्कारो के ध्वजवाहक भी है।डॉ. कल्पना वर्मा को उनके कहानी संग्रह 'छोटे शहर की लड़की' पर दिया जा रहा है।आप 21वी सदी के कथाकारों में विशिष्ट स्थान रखती है। डॉ. शिवानी चन्द्रा भारत में पैदा हुई पली बढ़ी और शोध हेतु अमेरिका वी अन्य यूरोपीय देशों की यात्रा की। आपके उपन्यास 'मिडिल रोड'पर यह सम्मान दिया जा रहा है।

आलोक नायर हिंदी रंगमंच के श्रेष्ठ नायक पटकथा लेखक और निर्देशक हैं। दक्षिण पूर्व एशिया तथा पाकिस्तान में कई कार्यक्रम कर चुके है आपको 'मैं सुभाष' नाटक पर कन्हैयालाल स्मृति साहित्य सम्मान दिया जा रहा है।

आलोक नायर (वरिष्ठ रंग निर्देशक)

इलाहाबाद विश्वविद्यालय से स्नातक तथा उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय इलाहाबाद से मास कम्युनिकेशन में डिप्लोमा लिया।आलोक नायर ने अपने कॉलेज के दिनों से नाटकों में अभिनय शुरू कर दिया, दिल्ली में प्रख्यात निर्देशक श्री भानु भारती जी के साथ कार्य करने का अनुभव प्राप्त हुआ साथ ही अंतरराष्ट्रीय निर्देशकों के साथ इवेंट्स का अनुभव भी मिला। लगभग 50 के आसपास नाटकों में अभिनय किया , 'ऑल इंडिया रेडियो इलाहाबाद' के नाटकों में अभिनय के साथ ही कुछ एड फ़िल्मों एवं फ़ीचर फ़िल्मों में अभिनय। वर्ल्ड थियेटर फेस्टिवल, लाहौर, पाकिस्तान में बतौर अभिनेता 'नौटंकी' विधा के माध्यम से प्रस्तुति दी । जनवरी 2012 में संस्था 'द थर्ड बेल' संस्था का गठन किया और बतौर निर्देशक कई नाटकों को निर्देशित किया जिनमें प्रमुख हैं रोमियो जूलियट, मौसम, इज़ाडोरा, हैमलेट, मैं सुभाष, जांच पड़ताल, डॉक्टर जवानी की प्रेम कहानी, होली, चंदू भाई नाटक करते हैं, हम क्यूँ हैं, मदारीपुर जंक्शन, वाया फुरसतगंज, ऑथेलो, बड़े भाई साहब,भ्राता राम,संक्रमण इत्यादि प्रमुख है। प्रयागराज की प्रसिद्ध तुू ि दल्ह् के माध्यम से 10 दिवसीय 'रामलीला' का निर्देशन भी किया। प्रमुख समाचार पत्र 'द टाइम्स ऑफ इंडिया' ने थिएटर के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य हेतु 'प्राइड ऑफ सिटी' से सम्मानित किया साथ ही लोकनाट्य सम्मान, प्रतिभा सम्मान, अभिनव सम्मान और रंग शिरोमणि से भी सम्मानित हुए। थिएटर के क्षेत्र हेतु इन्हें संस्कृति मंत्रालय,भारत सरकार की ओर से जूनियर . फेलोशिप भी प्राप्त हुई साथ ही इनकी संस्था ऊप Third Bell को थिएटर के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य हेतु संस्कृति मंत्रालय,भारत सरकार की ओर से रेपर्टरी ग्रांट प्रदान की गई है । प्रतिष्ठित प्रकाशन 'वाणी प्रकाशन' के लिए डॉक्यूमेंट्री का निर्देशन एवं माध्यमिक शिक्षा परिषद (U.P. Board) उत्तर प्रदेश के लिए डॉक्यूमेंट्री का निर्देशन के साथ ही विभिन्न विषयों पर कई डॉक्यूमेंट्री बनाईं । समय - समय पर कई रंग कार्यशालाओं का निर्देशन करतें रहें हैं।

हिन्दी जाति और रामविलास शर्मा

डॉ राजेश गर्ग

डॉ0 रामविलास शर्मा ने हिन्दी के विशाल प्रदेश में हिन्दी जाति की भूमिका पर गंभीरता के साथ विचार किया है। वे नस्ल और धर्म को नहीं बल्कि भाषा को जातीयता का आधार मानते हैं। उनकी हिन्दी जाति के अन्तर्गत हिन्दू और मुसलमान दोनों हैं, जैसे संगीत और नृत्य के क्षेत्र में हिन्दू संगीत या नृत्य और मुस्लिम संगीत या नृत्य का अंतर नहीं किया जाता वैसे ही साहित्य के क्षेत्र में भी यह भेद नहीं किया जाना चाहिए। रामविलास शर्मा के अनुसार भाषा के आधार पर भारत में जितनी भी जातियाँ हैं उनमें सबसे बड़ी जाति है हिन्दी जाति।

डॉ0 शर्मा केवल हिन्दी साहित्य के ही विचारक नहीं हैं, बल्कि वे हिन्दी जाति के भी विचारक हैं जो हिन्दी के माध्यम से अपनी भाषा के चिन्तन पक्ष को अधुनातन और नये सांस्कृतिक मूल्यों से अर्थवान बनाते हैं। इस ग्रंथ में मैंने हिन्दी जाति के सम्बन्ध में उनके विचारों को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। उनके द्वारा प्रस्तावित हिन्दी जाति की अवधारणा हिन्दी क्षेत्र को सांप्रदायिकता और संकीर्णता से मुक्त करने का प्रयास है। इसका उद्देश्य हिन्दू मुसलमान आदि विभिन्न मतावलंबियों, हिन्दी और उसकी बोलियों तथा उर्दू आदि को जातीयता के सूत्र में एकताबद्ध करना है। रामविलास शर्मा की सम्पूर्ण आलोचना में हिन्दी जाति की अवधारणा को लेकर उनकी बेचैनी बहुत साफ है, क्योंकि उनका मानना है कि बहुभाषाभाषी और उनके जातीयताओं वाले इस विशाल देश को एकता के सूत्र में बाँधने वाली हिन्दी जाति और हिन्दी भाषा ही है।

रामविलास शर्मा के कार्यों का सबसे महत्त्वपूर्ण पक्ष यह माना जाता है कि उन्होंने हिन्दी जाति को सन्दर्भ बिन्दु बनाकर पूरी भारतीय सांस्कृतिक परंपरा को दिखाया है। यद्यपि डॉ0 शर्मा ने आलोचना, भाषा विज्ञान, इतिहास, दर्शन, राजनीति, संस्कृति आदि कई क्षेत्रों में काम किया है लेकिन हिन्दी जाति पर किया गया उनका चिंतन अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। उनके जीवन व्यवहार और लेखन में जो अन्तस्सूत्रता है वह अन्यत्र दुर्लभ है। डॉ.रामविलास के रुप में हिन्दी जाति को पहली बार उसका सच्चा प्रतिनिधि मिला। हिन्दी समाज और चिंतन में उनका मुख्य कार्य हिन्दी की अस्मिता और अधिकार के लिए उनका दुर्धर्ष संघर्ष है। उनका चिंतन न केवल हिन्दी समाज की जातीय और जनतांत्रिक चेतना का बल्कि नए सांस्कृतिक साम्राज्यवाद के खिलाफ भारतीय संघर्ष का एक बड़ा हथियार है। वे हिन्दी जाति के प्रश्न को जातीय स्वाभिमान और देश की जनता की मौजूदा हालात तथा आर्थिक परिस्थितियों से जोड़कर देखते हैं इसलिए उनके चिंतन में बेहद गतिमयता और ऊर्जा, आंतरिक आत्मविश्वास और दृढ़ता है। वे भारत की भाषा समस्या को मूलतः जातीय समस्या का ही एक अंग मानते थे। बंगाली जाति, तमिल जाति, उड़िया जाति, पंजाबी जाति, कन्नड़ जाति, मलयालम जाति आदि इस देश में अनेक भाषाएँ बोलने वाली जातियाँ रहती हैं इनसे मिलकर भारत राष्ट्र बना है। डॉ0 शर्मा इन जातियों के सह-अस्तित्व की बात करते हैं। उनके अनुसार हिन्दी जाति में सभी जातियों को मानवीय स्नेह पाश में समेटने वाली ऊँचे धरातल की भारतीय राष्ट्रीयता है। हिन्दी जाति साधारणतः त्याग, उदारता और सहिष्णुता का समुद्र है,इसने कभी किसी को पराया नहीं समझा यहां तक विदेशियों को भी नहीं। यहाँ जो भी आया यहाँ की जातीयता में घुल मिल गया; तुर्कों की तुर्क जातीयता खत्म हो गई, वे मुसलमान बने रह गए लेकिन दृष्टि से वे वैसे ही हिन्दुस्तानी थे जैसे दूसरे । साहित्य में अमीर खुसरो,जायसी, रहीम, रसखान, आलम जैसे कवियों ने यहाँ के साहित्य को समृद्ध किया। अगर दरबार में साहित्य रचा गया तो उसमें हिन्दू मुस्लिम दोनों थे, अगर भक्ति आंदोलन चला तो उसमें भी दोनो साथ रहे। इस प्रकार डॉ रामविलास शर्मा हिन्दी जाति को व्यापक दृष्टि से परखकर भारतीय संस्कृति से सम्बद्ध करते हैं।

शहर समता विचार मंच

"कन्हैया लाल स्मृति साहित्य सम्मान 2024"

वरिष्ठ रंगकर्मी आलोक नायर को उनके नाटक "मैं सुभाष" पर

डॉ शिवानी चंद्रा को उनके उपन्यास "मिडल रोड" पर

डॉ कल्पना वर्मा को उनकी कहानी संग्रह "छोटे शहर की लड़की" पर

मिथिलेश कुमार त्रिपाठी को उनके महाकाव्य अर्द्धांगिनी' पर

डॉ राजेश कुमार गर्ग को उनकी आलोचनात्मक कृति "हिन्दी जाति और रामविलास शर्मा" पर

24 फरवरी 2024 दिन में 2 बजे

स्थान - हिन्दुस्तानी एकेडमी, प्रयागराज

स्व0कन्हैया लाल स्मृति साहित्य सम्मान

संजय सक्सेना

यह सम्मान स्वर्गीय कन्हैयालाल श्रीवास्तव की स्मृति में 'शहर समता'(साप्ताहिक,दैनिक) समाचार पत्र के यशश्वी संपादक श्री उमेश श्रीवास्तव जी द्वारा शहर समता के मंच से प्रदान किया जाएगा।

स्व0 कन्हैया लाल श्रीवास्तव जी का जन्म 1924 ईस्वी में बहुता चकडाही,सुरियावां, वाराणसी जनपद में हुआ था। प्रारंभिक शिक्षा गांव में ही प्राथमिक स्कूल में हुई।जूनियर हाई स्कूल की परीक्षा ज्ञानपुर स्थित स्कूल से पास की। आगे की शिक्षा के लिए इलाहाबाद की ओर उन्मुख हुए। वहीं पर 1944 ईस्वी में इंडियन प्रेस के लेखा-अकाउंट विभाग में नियुक्ति प्राप्त की। जहां से सरस्वती मासिक पत्रिका प्रकाशित हो रही थी। आपने सरस्वती के कई संपादकों को समय- समय पर वैचारिक सहयोग देने का प्रयास किया। 33 वर्षों तक निर्विकार भाव से, पूरी तन्मयता, कर्मण्यता से इंडियन प्रेस में सेवारत रहे। 24 फरवरी 2004 को इस दुनिया से परलोक सिधार गए।आपके यशस्वी पुत्र श्री उमेश चंद्र श्रीवास्तव जी ने आपके ही दिशानिर्देश में, आपके ही आशीर्वाद से20 मई 2001 ई0 में 'शहर समता' नाम से साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन शुरू किया और भारत सरकार द्वारा इस पत्र को मान्यता प्रदान की गई और इसकी लोकप्रियता ने दैनिक रूप में भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराई हैं। आज शहर समता नाम साप्ताहिक और दैनिक(सितंबर2004से) दोनों क्षेत्रों में लोकप्रिय हो गया है। साप्ताहिक शहर समता साहित्य विशेषांक के रूप में अब तक 90 से अधिक गुमनाम साहित्यकारों को साहित्य की मुख्यधारा से जोड़ने का प्रयास किया है और लोगों के समक्ष उन साहित्यकारों को प्रस्तुत भी कराया है। इसी कारण शहर समता की डिमांड पूरे देश के विश्वविद्यालयों विदेशों में स्थित हिंदी सेवाओं के द्वारा की जा रही है और उसका साहित्य विशेषांक अत्यधिक लोकप्रिय है। कई साहित्यकार उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान से पुरस्कृत हो चुके हैं। जिनको भी शहर समता ने मंच उपलब्ध कराया, आज वे ही यशस्वी साहित्यकार के रूप में समाज में प्रतिष्ठित हो चुके हैं। इसी कड़ी में शहर समता के यशस्वी संपादक उमेश चंद्र श्रीवास्तव जी अपने देव तुल्य पूज्य पिता स्वर्गीय कन्हैया लाल श्रीवास्तव की स्मृति में स्वर्गीय कन्हैयालाल स्मृति साहित्य सम्मान की घोषणा की है, जो हर वर्ष कवियों, कथाकारों, नाटककरो, उपन्यासकारों और आलोचकों की रचनाओं पर दिया जाता है।

शहर समता (हिन्दी साप्ताहिक) के वार्षिक एवं तीन वर्षीय सदस्य बनें।

वार्षिक सदस्यता के लिए -200/- **तीन वर्षीय सदस्यता के लिए -500/-**

कृपया 'शहर समता' के नाम से चेक या आनलाइन भेज सकते है।

IFSC Code- PUNB0100120 A/c.-1001050011592

व्यवस्थापक

शहर समता (हिन्दी साप्ताहिक)

289/238 ए (अनंत भवन) कर्नलगंज ,इलाहाबाद-211002

पीडीफ़ के लिए **shaharsamta.blogspot.com** पर जाएँ ।

शहर समता - ब्यूरो प्रमुख

देहरादून ब्यूरो - निशा अतुल्य,
सतना ब्यूरो - डॉ ऊषा सक्सेना,
रीवां ब्यूरो - साधना तिवारी,
लखनऊ ब्यूरो - मंजु सक्सेना,
जबलपुर ब्यूरो - शैली सेठ,
लुधियाना ब्यूरो - श्रद्धा शुक्ला,
जौनपुर ब्यूरो - डॉ मधु पाठक,
हैदराबाद ब्यूरो -रीना प्रदीप कुमार,
भिलाई ब्यूरो - संध्या चंदेल,
गोरखपुर ब्यूरो - चित्रा श्रीवास्तव,
दिल्ली ब्यूरो - अफरोज़ अजीज,
तिनसुकिया गोलाघाट ब्यूरो - रंजना बिनानी,
प्रयागराज ब्यूरो - डॉ आकांक्षा पाल,
भीलवाड़ा ब्यूरो - डॉ राजमति पोखरना,
इंदौर ब्यूरो - आशा जाकड़,
शिलांग ब्यूरो - डॉ अनीता पंडा,
बिलासपुर ब्यूरो - स्मृति मिश्रा 'रीति,
रायपुर ब्यूरो - सीमा निगम,
कानपुर ब्यूरो - सीमा वर्णिका,
भोपाल ब्यूरो - दीपमाला तिवारी,
दमोह ब्यूरो- भावना शिवहरे,
मण्डला ब्यूरो - डॉ अर्चना जैन
बनारस ब्यूरो - सुनीता जौहरी,
आरा ब्यूरो - सिम्पल सिंह,
बिजनौर ब्यूरो - ऋतुबाला रस्तोगी,
पठानकोट ब्यूरो - क्षमा लाल गुप्ता,
सप्तरी नेपाल ब्यूरो - करुणा झा,
धमतरी ब्यूरो - कामिनी कौशिक,
रामपुर ब्यूरो - चंद्रिका कुमार 'चांदनी',,
मुरादाबाद ब्यूरो - अभिव्यक्ति सिन्हा,
कटनी ब्यूरो - मीरा भार्गव,
पटना ब्यूरो - अंजू भारती

संस्थापक

स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 साधना श्रीवास्तव

सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
आरएनआई नं0 UPHIN/2001/3996

उप संपादक
डा0 अरूण कुमार मिश्रा
रचना सक्सेना

Mo. 9005239332 Email-shaharsamta@gmail.com

स्वत्वाधिकारी/मुद्रक/प्रकाशक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा इण्डियन प्रेस (पलि.) प्रा0लि0, 36 पन्ना लाल रोड, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए, (अनन्त भवन) कर्नलगंज, इलाहाबाद से प्रकाशित।

इस अंक के प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा समस्त विवादों का निपटारा इलाहाबाद न्यायालय में ही होगा।

स्त्री के अस्तित्व की तलाश है 'छोटे शहर की लड़की'

डॉ कल्पना वर्मा -

'छोटे शहर की लड़की' कहानी संग्रह में स्त्री को उसकी संपूर्णता के आईने में देखा गया है । पुरुष मानसिकता के बीच से एक स्त्री के अस्तित्व की तलाश की गई है । प्रकृति ने जिस नर और नारी की संरचना की थी वह एक दूसरे के पूरक रूप में हैं । नैसर्गिक नियमों की वास्तविकता को आज नए परिवेश में तमाम सच्चाइयों से रूबरू होना पड़ रहा है । स्त्री विमर्श के प्लेटफ़ॉर्म पर स्त्री नए अंदाज़ में दिख रही है । यह उसका पुरुष हो जाना क़तई नहीं है । स्त्री एक कोमल संरचना ही रहेगी । नज़र और नज़रिया तभी मायने रखता है जब पारखी सामने हो । पारखी पाठकों के समक्ष यह पुस्तक है । इसके चरित्र इसकी घटनाएँ यदि किसी को अपने जैसे लगें तो यह मेरी ईमानदारी की सफलता होगी । अन्यथा कहानियों के पात्र नितांत मौलिक हैं । उनमें कल्पना और यथार्थ का मिश्रण है ।

संग्रह की कुछ कहानियां नितांत व्यक्तिगत हैं ।इनमें से 'मेरी कहानी' 'मीनू दी' कहानियां इसी प्रकार की हैं । 'मुट्ठीभर ज़िंदगी' को मैंने नज़दीक से देखा है । 'ऐसा क्यों होता है' या 'कछुए हारने लगे हैं' में मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रतिक्रियाएं हैं । 'निर्णय' , 'डिरेलमेंट' या 'स्वार्थी सहारा' जैसी कहानियां स्त्री के परिप्रेक्ष्य में ठहर कर देखी गई है । वैसे तो स्त्री होने के कारण मेरी प्रत्येक कहानी में मुझे स्त्री का नज़रिया ही दिखता है फिर भी 'पालन और पलायन' एवं 'ऑनलाइन ऑफ़लाइन' कहानियां पुरुष मानसिकता से जुड़ी हैं । कहानियों को पढ़कर पाठकों की प्रतिक्रिया ही उनके वास्तविक स्वरूप को स्थापित करेगी ।अपनी समझ का रंग मैंने अपने बरक्स उसमें भरने की कोशिश की है । यह कोई आत्म स्वीकृति नहीं है । है तो बस एक हरकत ठहरे जल में कंकड़ डालने की ।

जीवन वृत्त

डॉ कल्पना वर्मा की जन्मभूमि और कर्मभूमि दोनों इलाहाबाद रही है । 12 सितंबर 1957 में जन्मी कल्पना वर्मा ने बारहवीं तक की अपनी पढ़ाई इल ाहाबाद के प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थान सेंट एन्थोनी कान्वेंट स्कूल से पूरी की । उच्च शिक्षा इलाहाबाद विश्वविद्यालय में प्राप्त की । 1975 में स्वर्गीय रवींद्र कुमार मौर्य से आप का विवाह हुआ । उस समय अपने सोचा भी नहीं था कि आगे की शिक्षा का क्या होगा । ऊइ बोर्ड से 12वीं की परीक्षा का परिणाम आ चुका था । अभी विश्वविद्यालय में प्रवेश के लिए विचार बन ही रहा था कि रवि के आग्रह और अनुरोध के चलते परिवार वालों ने विवाह तय कर दिया ।मई 1975 में डॉ वर्मा अपने बाई का बाग वाले मायके से कीटगंज वाली ससुराल आ गई ।विवाह के बाद भी उनके पति ने पढ़ाई जारी रखने का आश्वासन दिया था जिसे उन्होंने पूरा किया ।बी ए , एम ए फिर शोध कार्य अबाध गति से पूरा हुआ । इस दौरान आप रोमिल और रूपम - दो पुत्रों की माँ भी बन गयी थी । जब विश्वविद्यालय में त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम की शुरूआत हुई तब आर्य कन्या डिग्री कॉलेज , प्रयागराज द्वारा विज्ञापित हिन्दी प्रवक्ता के पद के लिए तो आपने साक्षात्कार दिया । वहाँ चयनित हो जाने के बाद अपनी पूरी निष्ठा से विभागाध्यक्ष हिन्दी के पद से अपना सेवाकाल पूरा किया । लगभग 36 वर्षों के अध्यापक की अध्यापकीय अनुभव के साथ 30 जून 2023 में सेवानिवृत्त हुईं ।

हिन्दी साहित्य आपका रुचिगत विषय है ।पिछले 40 वर्षों से आप सृजनात्मक लेखन और आलोचना की प्रति सक्रिय हैं । परिवार और नौकरी के बीच सामंजस्य बैठाकर डॉ कल्पना वर्मा ने शिक्षा के क्षेत्र में नए प्रतिमान गढ़े हैं ।लेखन कार्य के लिए आपको अनेक बार सम्मानित किया जा चुका है । थाईलैंड , कंबोडिया , वियतनाम आदि की विदेश यात्राएं की हैं । 2014 का प्रमोद वर्मा सम्मान आपको कंबोडिया में दिया गया । 2018 का स्टेट एन एस एस अवार्ड तथा बेस्ट प्रोग्राम ऑफ़िसर अवार्ड आपको मिल चुका है । आपके द्वारा लिखी गई पुस्तकों की एक लंबी सूची है । सभी पुस्तकें विद्यार्थियों और साहित्य प्रेमियों के लिए उपयोगी है ऊ

कहानी संग्रह-

1 छोटे शहर की लड़की

कविता संग्रह-

2 कुहासे के बाद

3 शब्दों की नज़र से

पाठ्यक्रम संबंधी लेखन-

4 काव्य भाषा और हिन्दी भाषा

5 हिन्दी साहित्य का इतिहास : बोधगम्य पाठ

आलोचनात्मक निबंध संग्रह-

6 समकालीन विमर्श

7 साहित्य और समकालीनता

8 परंपरा और आधुनिकता

सम्पादित पुस्तके-

9 स्त्री विमर्श : विविध पहलू

10 समकालीन लेखन और आधुनिक संवेदना

11 भूमंडलीकरण और हिन्दी

12 नवजागरण और प्रसाद की समकालीनता 13 कोरोना काल और साहित्य चेतना

13. कोलाज-

14 काल : आमने सामने

15 विजयिनी मानवता हो जाए

डॉ कल्पना वर्मा ने अनेक राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय गोष्ठियों का आयोजन किया है तथा उसमें सहभागिता भी की है । आपके 50 से अधिक शोध पत्र प्रकाशित हैं । वर्तमान में पालि भाषा के अध्ययन और अध्यापन का कार्य कर रही है । धम्म लिपि की प्रासंगिकता पर शोध चल रहा है । सेवानिवृत्ति के बाद भी समाज सेवा का क्षेत्र आपने स्वेच्छा से अपनाया है । कुछ भी व्यर्थ नहीं है यह प्रेरक वाक्य रहा है । आपमें सीखने की अदम्य लालसा है । जहाँ से जो भी ज्ञान मिलता है डॉ वर्मा के लिए वह उपयोगी रहता है । शब्द के साथ दृश्य भी आपके आकर्षण का केंद्र रहे हैं । इलाहाबाद विश्वविद्यालय से फोटोग्राफ़ी में सर्टिफ़िकेट कोर्स किया है । लगभग 49 वर्षों का अनुभव फोटोग्रॉफी के क्षेत्र में भी है । 1985-2017 तक रूपम स्टूडियो के नाम से प्रतिष्ठान चलाया था ।यहाँ इक्षुक युवक युवतियों को फोटोग्राफ़ी का प्रशिक्षण देकर उन्हें स्वावलंबी बनाने में योगदान दिया । प्रतिष्ठान के संस्थापक अपने पति के साथ मिल कर उनके काम को ऊंचाइयों तक पहुँचाया । उनके अवसान के बाद भी उनके द्वारा प्रारंभ किये गये कार्यों को पूरी निष्ठा के साथ संपन्न किया है।

लेखन डॉ कल्पना वर्मा का प्रिय क्षेत्र है । अवसाद के क्षणों से लेकर उत्साह के क्षणों तक का लेखा जोखा वे अपने लेखन के माध्यम से प्रस्तुत करती हैं । कविताओं और कहानियों का सृजन उन्हें कभी बिखरने नहीं देता । स्वान्तः सुखाय यह रचना धर्मिता आजीवन चलेगी यह आपका मानना है । इससे भी बढ़कर यह बात है कि आप अति अनुशासनप्रिय - स्पष्ट भाषी महिला , सहृदय माँ , कर्तव्यनिष्ठ बेटी भी हैं । रिश्तों को संजोने में विश्वास रखती है । सही को सही ग़लत को ग़लत कहने का आपमें अदम्य साहस है । आपने कभी भी अनुचित के साथ समझौता नहीं किया है । आत्म संतुष्टि आपके व्यक्तित्व में झलकती है ।

सेवानिवृत्त एसोसिएट प्रोफ़ेसर ,
आर्य कन्या डिग्री कॉलेज ,
प्रयागराज

लेखन हमारे जींस में... –

डॉ शिवानी चंद्रा

अगर हम ये कहें की साहित्य हमें विरासत में मिला है, तो शायद गलत नही होगा। हमारा जन्म उत्तर प्रदेश की आध्यात्मिकनगरी वाराणसी में हुआ। लेकिन हम रहे हमेशा कानपुर में। हमारी शिक्षा दीक्षा कानपुर में ही हुई। हमारे घर में लिखने पढ़ने का माहौल था। हमारे पापा बहुत किताबें पढ़ते थे। मां काफी कुछ लिखा करती थीं, लेकिन घर गृहस्थी में फंस के रह गईं। हमारे बाबा उर्दू में शायरी किया करते थे। तो लिखना हमारे जींस (genes) में आ गया। हमारा बचपन गीता प्रेस की किताबें , चंदा मामा, चंपक, मधु मुस्कान, और अमर चित्रकथा जैसी किताबें पढ़ते बीता। साहित्य की तरफ झुकाव हमेशा से था, शौक बहुत था कविता कहानियां पढ़ने का, लेकिन स्कूल की पढ़ाई के कारण बहुत ज्यादा समय नहीं दे पाए। दसवीं के बाद विज्ञान लेने के बावजूद हमने हिंदी भी ली । बारवीं में हमारे विज्ञान वर्ग में सर्वोच्च अंक प्राप्त किए । हमें याद है की हमारी हिंदी टीचर बहुत खुश हुई थीं, के साइंस क स्टूडेंट्स के इतने अच्छे नंबर कम ही आते हैं। अपनी MSc करने के बाद हम पढ़ने के लिए अमरीका चले गए। Molecular Genetics हमारा विषय रहा। और अमरीका की नामी गिरामी संस्था ऊर्छें में काम किया। बतौर एक जीनोम साइंटिस्ट, हमारे बहुत से रिसर्च पेपर, और text book chapters प्रकाशित हुए। हम एक अंतराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त जीनोम साइंटिस्ट तो बन गए, लेकिन इस बीच हिंदी कहानियां और किताबें कहीं बहुत पीछे छूट गईं। फिर करीब एक दशक के बाद हम भारत वापस लौटे, और लौट आईं हमारे घर में हिंदी किताबें। आज भी , हम जब भी कानपुर ट्रेन से जाते हैं तो वहां की किताबों की दुकान और गीता प्रेस की दुकान से कुछ किताबें जरूर खरीदते हैं। और मॉल में कपड़ों से ज्यादा हम किताबों की दुकान ढूंढते हैं। हमें याद है, भारत वापस आने के बाद हमने पहली किताब खरीदी थी, बड़े घर की बेटी, प्रेमचंद जी हमारे सबसे प्रिय लेखक हैं। उसके बाद कई महान लेखक जैसे महादेवी वर्मा, शिवानी, मनु भंडारी, कमलेश्वर, मंटो, इस्मत चुगताई इत्यादि की कहानियां पढ़ने लगे। और वो कहते है न की की जब दिल दुखी होता है तो वो कविता और शायरी की ओर बढ़ता है। तो पढ़ने लगे गुलज़ार साहब को, जावेद अख्तर जी को, वसीम बरेलवी जी को, बशीर बद्र साहब को और कोशिश की समझने की मिर्जा गालिब को।

अब बात करते हैं लिखने की। तो जनाब हमने तो कभी सोचा ही नहीं था की हम हिंदी कविता या कहानी लिख सकते हैं। अपने निजी जीवन के कुछ संघर्षपूर्ण दिनों में मन की व्यथा यूं ही कागज पर उतार दी। इससे बड़ा सुकून मिला। आप लोगों को जानकर आश्चर्य होगा कि जहां ज्यादातर लोगों को ऑफिस से घर आ कर सुकून मिलता है वहीं हमको, घर से ऑफिस जा कर सुकून मिलता था। कभी कभी घर से इतने खराब मूड में ऑफिस जाते कि , वहां पहुंचते ही अपने मन का बोझ कागज पर उतार देते , ताकि ऑफिस का काम अच्छे से निपट जाए। और बस वहीं से शुरू हुआ कविता लिखने का सिलसिला और हमारे लिखने का सफर।

एक दिन हमारी बहन की मुलाकात लोकरंजन प्रकाशन के रंजन पांडे जी से हुई। उसने उनको बताया कि हमने भी कुछ कविताएं लिखीं हैं। प्रकाशन भी नया था, उन्होंने हमारी कविताएं पढ़ीं और कहा की हम आपकी किताब निकालेंगे।

हम तो खुशी से झूम उठे। हमारी साहित्यिक यात्रा का आगाज हुआ 2022 में, हमारे कविता संकलन ' सुनो ना' से । ईश्वर की कृपा से इस किताब को और हमको बहुत प्यार मिला। सबने इस किताब को बहुत पसंद किया। इससे हमारी बहुत हौसला अफसाई हुई। बस फिर क्या था, हमने अगले ही साल अपना 'मिडिल रोड' प्रकाशित किया , एक बार फिर लोकरंजन प्रकाशन से । इस किताब को भी लोगों ने बहुत पसंद किया। साहित्य ने हमारे जीवन को एक खूबसूरत मोड़ दे दिया। और अनायास ही बढ़ गए हमारे कदम अपनी साहित्यिक यात्रा पर।

हम अपनेआप को बहुत खुशकिस्मत समझते हैं कि हमको इस सफर के पहले कदम पर ही हम बहुत ही अच्छे लोगों का साथ मिला। हम कृतज्ञ हैं साहित्यांचल भिलवाड़ा के, जिन्होंने हमको साहित्यांचल सृजन सम्मान से नवाजा।

शहर समता की नोएडा इकाई में बेहतरीन कवित्रियों से मुलाक़ात हुई। उनके असीम स्नेह ने हमारा खुद पर भरोसा और उत्साह बढ़ाया। उनकी रचनाएं सुनने और अपनी कहने का अवसर प्राप्त हुआ । शहर समता के राष्ट्रीय महिला रचनाकार मंच पर देश भर की महिला रचनाकारों को सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। ऐसा लग रहा है की जिंदगी ने एक नया मोड़ ले लिया है और हम चल पड़े हैं एक नए सफर पर, एक नए रास्ते पर जो बेहद

सुहाना है। हम रोज नई नई विधाएं सीख रहे हैं, और अपनेआप को बेहतर बनाने की कोशिश कर रहे हैं। रोज़ अपने आप को खोज रहें हैं, और इस सफर के एक एक क्षण को जी रहे हैं। जिंदगी गुलज़ार है ।

हमारी इस यात्रा में हमारे साथ शामिल हैं हमारी बेटियां, हमारी बहनें, हमारे भाई भाभी और हमारे मित्र। हमारे साथ वो भी चल पड़े हैं हमारे इस नए सुहाने सफर में। और ऊपर आकाश से हमारे मम्मी पापा फूले नहीं समा रहे। हमें पता है कि उनका आशीर्वाद हमेशा हमारे साथ है।